अजायब बानी

मासिक पत्रिका

सितम्बर-2021

आज खुशी दिन आया जी

11 सितम्बर, बाबा जी का शुभ जन्म दिहाड़ा

आज खुशी दिन आया जी,
मनाया संगतां ने, x 2

1. अविचल नगर गोबिंद गुरु का, x 2
नाम जपत सुख पाया जी,
मनाया संगतां ने .....

2. मन इच्छे से ही फल पाऐ, x 2
करते आप वसाया जी,
मनाया संगतां ने .....

3. आप वसाया सर्व सुख पाया, x 2
पुत भाई सिक्ख बिगासे जी,
मनाया संगतां ने .....

4. गुण गावे पूरण परमेश्वर, x 2
कारज आया रासे जी,
मनाया संगतां ने .....

5. आप स्वामी आपे राखा, x 2
आप पिता आप माया जी,
मनाया संगतां ने .....

6. कहो 'नानक' सतगुरु बलिहारी, x 2
जिन ऐहो थान सुहाया जी,
मनाया संगतां ने .....

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष–उन्नीसवां अंक–पांचवां सितम्बर–2021

सारी संगत की तरफ से प्यारे बाबा जी को जन्मदिन की लख–लख बधाई

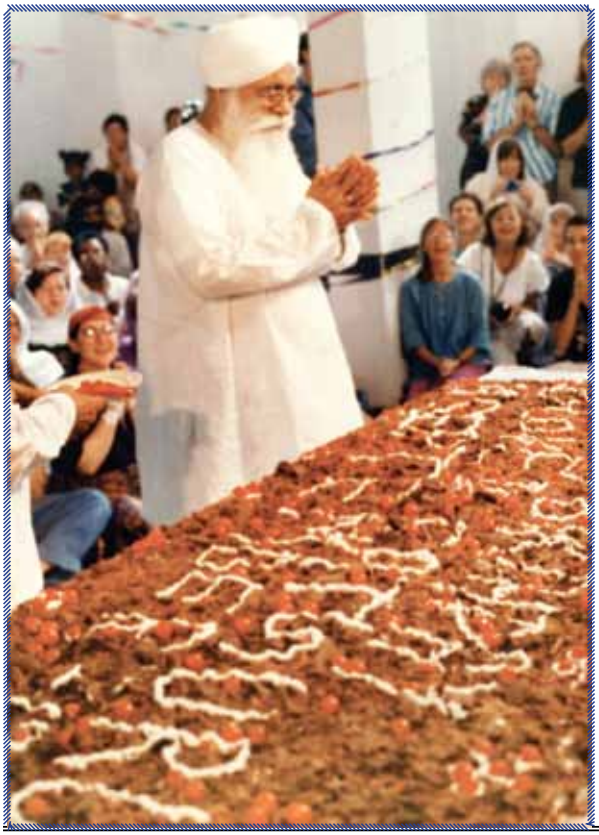

3
अज शुभ दिहाड़ा ऐ
(शब्दों की महानता का वर्णन)

9
परमात्मा आपके अंदर है
(सतसंग – 9 जनवरी 1987)

27
परोपकार
(एक सन्देश)

31
भजन-अभ्यास
(अभ्यास में बिठाने से पहले)

33
नये शब्द

प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम** 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039 जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान)
संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** 99 50 55 66 71 80 79 08 46 01
विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया** 96 67 23 33 04 99 28 92 53 04
उप संपादक : **नन्दनी** सहयोग : **परमजीत सिंह व डॉ. सुखराम सिंह**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 234 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

30 सितम्बर 1995

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा शब्दों की महानता का वर्णन

अज शुभ दिहाड़ा ऐ

16 पी.एस.आश्रम (राजस्थान)

परमपिता परमात्मा सावन–कृपाल को एक बार नहीं करोड़ों बार नमस्कार है। आपने इस गरीब आत्मा पर रहम किया अपनी भक्ति का दान दिया। हम रोजाना जो भजन बोलते हैं इनमें से बहुत से भजन परमात्मा कृपाल ने सुनें हैं। आप अपने गुरु के दीवाने थे। जिन प्रेमियों ने आपको नज़दीक से देखा है वे जानते हैं कि आपके दिल में अपने गुरु के विछोड़े का बहुत दर्द था।

हरबंस और निर्मल को आपके चरणों में भजन बोलने का मौका मिला है। महाराज कृपाल कहा करते थे, ''सन्तों को सेवक के प्यार की जरूरत नहीं वे अपने गुरु के प्यार में मस्त होते हैं।'' हम जब तक उनकी नकल करके उनकी तरह अपने अंदर गुरु के लिए प्यार नहीं बनाते तब तक हम कामयाब नहीं हो सकते। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

ज्यों बुलावे त्यों नानक दास बोले

सेवक कठपुतली है, सेवक की डोर गुरु के हाथ में है। पश्चिम के बहुत से प्रेमियों ने एक बार सवाल किया, ''हम कैसे जानें कि हमारी डोर गुरु हिलाता है या हमारा मन हिलाता है?'' मैंने उन्हें प्यार से बताया, ''जब हमारे अंदर ईर्ष्या और अभाव की लहरें उठती हैं, हम बुरी तरफ जाते हैं तो हमें समझ लेना चाहिए कि हमारे ऊपर मन का कब्जा है। जब हमारे अंदर भजन–सिमरन और गुरु के प्यार के ख्याल उठते हैं तब हमें समझ लेना चाहिए कि सतगुरु हमारी डोर खींच रहा है। जब हमारे अंदर ऐसे नेक ख्याल उठते हैं अगर उस समय हम सिमरन करें और अभ्यास में बैठ जाएं तो बहुत जल्द ही तरक्की कर जाएंगे।'' एक भजन में आता है:

बोल 'अजायब' रेहा तू जिवें बुलौंदा ऐं

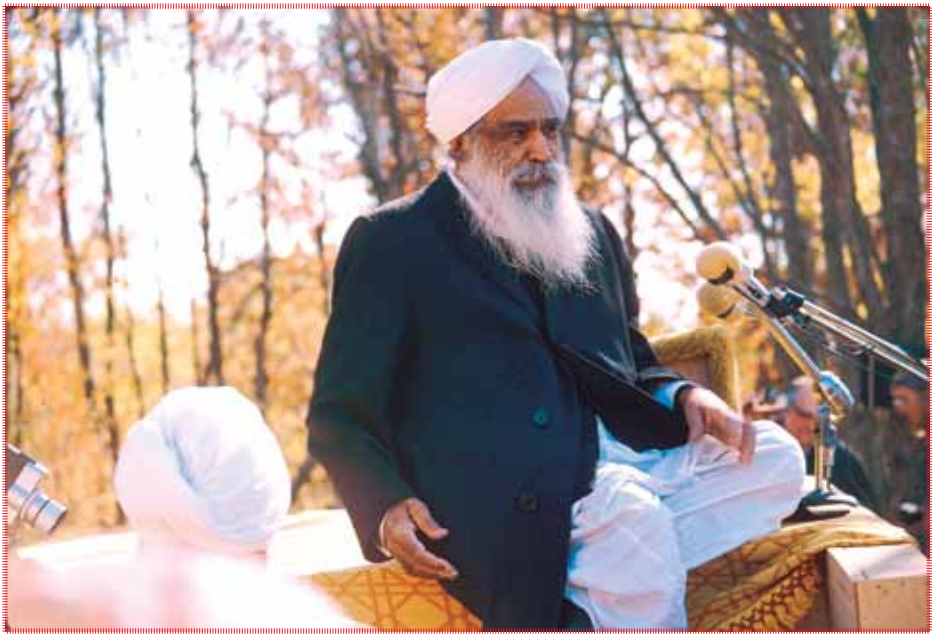

यह आपकी मर्जी थी आपने जैसे बुलवाया वैसे ही बोल दिया। जब हुज़ूर कृपाल पहली बार आए तब निर्मल सिंह ने यह भजन बोला थाः

अज शुभ दिहाड़ा ऐ, भागां नाल आया ऐ,
सतगुरु जी प्यारे दा, अज दर्शन पाया ऐ, x 2

1 जग औजड़ उलझे नूं, जग भुल्ले भटके नूं,
जग वहमां जकड़े नूं, जग थिड़के अटके नूं x 2
बाणी उपदेश सुणा, गुरां राहे पाया ऐ, अज शुभ दिहाड़ा ऐ.....

2 कुझ नूर दियां गल्लां, कुझ दूर दियां गल्लां,
होठां ते थिरकन एयों, ज्यों सागर दियां छल्लां x 2
कुझ लंघे वक्त दियां, कुझ ऐस्से वक्त दियां,
कुझ अगले वक्त दियां, गल्लां कैह–कैह गुज्जियां
दिल टुंब जगाया ऐ, अज शुभ दिहाड़ा ऐ.....

3 इस फानी दुनियां चों, जो पुज्ज प्यारा ऐ,
जो वस है लालच दे, बेचमक सितारा ऐ, x 2
इस जग हनेरे चों, पापां दे डेरे चों,
ओहदे ते ऐहदे चों, तेरे ते मेरे चों,
सच्चे ते झूठे दा, जिस भेद मिटाया ऐ, अज शुभ दिहाड़ा ऐ.....

4 जो इस राहे आवे, जो इस राहे जावे,
नरकां दा भागी वी, स्वर्गां दी शह पावे, x 2
ऐह अपनी खेती ऐ, ऐहनूं जेहड़ा करदा ऐ,
अगेती या पछेती ऐ, ना भुक्खा मरदा ऐ,
इस राहे हर पापी, टुर भगत कहाया ऐ, अज शुभ दिहाड़ा ऐ.....

5 ना विच मसीत मिले, ना विच मंदिर प्रभु,
ना विच उजाड़ां दे, है सब अंदर प्रभु, x 2
ऐन्हां बाहरी अक्खियां नूं, जद बंद कर लैंदे हां,
गुरुआं दी सिखया दा, सिमरन कर लैंदे हां,
गुरुआं इस राहे पा, रब आप मिलाया ऐ, अज शुभ दिहाड़ा ऐ.....

6 बूँदा दे ओहले चों, बदलां दे ओहले चों,
कक्रां ते स्यालां चों, गर्मी दे शोले चों, x 2
गुरुआं दी कृपा नें, गुरुआं दी बाणी ने,
गुरुआं दे वाकां ने, लख पापी कढे ने,
जीन्नां ने गुरुआं दा, इक नाम ध्याया ऐ, अज शुभ दिहाड़ा ऐ.....

7 अजायब दी टेक ऐहो, कृपाल दे लग सेवे,
विच रज़ा दे रह राज़ी, प्रभु जो वी दे देवे, x 2
ऐह रस्ता है तेरा, इस तों जे भटकेंगा,
औजड़ विच पै जाऐंगा, जिल्लत विच अटकेंगा,
जिस गुरु भुलाया ऐ, उस सुख ना पाया ऐ, अज शुभ दिहाड़ा ऐ.....

प्रभु मंदिरों, मस्जिदों में नहीं मिलता। जब हम आँखें बंद करके गुरुओं के कहे मुताबिक सिमरन करते हैं तो देख लेते हैं कि वह गुरु परमात्मा

हमारे अंदर है। जिसने गुरु को भुला दिया वह संसार में कभी सुख नहीं पा सका। इस भजन को सुनकर हुज़ूर इतने खुश हुए कि उनकी आँखें भर आई। इस भजन में हुज़ूर के मुर्शिद की याद है। सन्तों के लिखे भजनों के पीछे उनका तप और त्याग काम करता है।

महाराज जी कहा करते थे, ''जब तक हम पारब्रह्म से ऊपर न चले जाएं तब तक हमें भूल से भी कविता नहीं रचनी चाहिए। निचले मंडलों की कविताएं विषय–विकारों से आती हैं, यह ऐसे है जैसे यहाँ आग जल रही है, पीछे से हवा आती है तो उसका गर्म सेक आगे की तरफ जाता है।'' इसी तरह मन–बुद्धि के स्तर पर बैठे हुए लोग दूसरों को समझाते हैं खुद नहीं समझते। कई बार काल उनका मजाक भी उड़ा देता है कि यह लोगों को महात्मा बनकर दिखाता है लेकिन खुद उस बीमारी से चिपका हुआ है।

झूठ आशिकी करे मुल्क में जुत्ती खाहे

पारब्रह्म से ऊपर जाने के बाद की रची हुई कविता हमारा जातिय तजुर्बा होता है। यह सूक्ष्म कल्पना काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार से रहित होती है। हम अपने आपको धन्य समझते हैं कि हमें अपने गुरु के सामने बैठकर भजन बोलने का मौका मिला।

गुरु नानकदेव जी से किसी प्रेमी ने पूछा, ''हम इस संसार समुंद्र से किस तरह पार हो सकते हैं? आप जिस यम का बार–बार जिक्र करते हैं वह बहुत जालिम है, वह हर किसी से पल–पल का हिसाब माँगता है। उसकी किसी के साथ दुश्मनी नहीं वह अपनी ड्यूटी पूरी करता है हुकूमत और धन–दौलत यहीं रह जाएगा, हम जिस परिवार और समाज का अहंकार करते हैं वह भी यहीं रह जाएगा इससे बचने का क्या उपाय है?''

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''अगर आपकी समझ में आ जाए इस यम से बचने का एक ही उपाय 'नाम' है।''

हर हर नाम जपेंदयां कछु न कहे यम काल
नानक मन तन सुखी होय अन्ते मिले गोपाल

जब विषय–विकारों की आग शान्त हो जाती है, मैं–मेरी की तपिश खत्म हो जाती है तब मन को सुख मिलता है। हम मन की गर्मी को तन से बुझाने की कोशिश करते हैं तो तन भी दुःखी होता है। नाम की कमाई करने वालों के मन को शान्ति आ जाती है, वे यम से बच जाते हैं और अन्त में प्रभु परमात्मा के चरणों में पहुँच जाते हैं। सन्त–महात्मा हमें समझाने के लिए ही बाणी का सहारा लेते हैं। एक महात्मा हमारे अंदर नाम का शौंक पैदा कर जाता है और दूसरा महात्मा नाम जपवाता है।

सन्त–महात्माओं के रहते हुए सब ठीक–ठाक चलता है लेकिन उन मालिक के प्यारों के जाने के बाद हम उनके नाम पर समाज बना लेते हैं। समाज को कौम की शक्ल देकर आपस में लड़ने–झगड़ने लग जाते हैं। परमात्मा फिर किसी और प्यारे को भेजता है वह उस भूली हुई विद्या को ताज़ा करता है और हमें इस तरह समझाता हैः

होय एकत्र मिलो मेरे भाई, दुविधा दूर करो लिव लाए
हर नामें की होवो जोड़ी, गुरुमुख बैठो सफा बिछाए

परमात्मा हम सबका पिता है हम सब उसके बच्चे हैं। हमारे ऊँचे भाग्य हैं कि हमारे सतगुरुओं ने हम पर दया करके हमें नाम का दान दिया है। इसे नाम कह लें या परमात्मा के घर जाने का वीज़ा समझ लें।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

09 जनवरी 1987
मुम्बई

परमात्मा आपके अंदर है

शेख फरीद साहब की बानी

DVD No - 79

संसार, महापुरुषों और सन्त–महात्माओं से कभी खाली नहीं रहा। परमात्मा सदा ही अपनी जानकारी देने के लिए इस मंडल पर कभी किसी महात्मा का तो कभी किसी महात्मा का तन धारण करके आता है। कभी उस परमात्मा का नाम कबीर, कभी नानक और कभी सावन पड़ा। ऊँचे भाग्य वाले उन महान हस्तियों से फायदा उठा लेते हैं बाकी दुनियावी जीव सोचते ही रह जाते हैं। दुनिया 'शब्द–नाम' का रास्ता छोड़कर रीति–रिवाज और कर्मकांड से ही परमात्मा को मिलना चाहती है।

महात्माओं की लेखनियों और उनके पवित्र हृदय से जो आवाज आ रही होती है उसे हम मज़हब या समाज का रूप दे देते हैं। महात्माओं का उपदेश सारी दुनिया के लिए होता है लेकिन हम उस उपदेश को प्रान्त, सूबे या कौमों के अंदर बंद कर देते हैं और अपने आपको उन महात्माओं का नुमाईंदा कहलवाते हैं फिर यह भी दावा करते हैं कि असली मायनों में हम ही उन महात्माओं को मान रहे हैं।

प्यारेयो! सच्चाई इससे उल्ट है। उन महात्माओं को वही मानता है जो उन महात्माओं के बताए हुए उपदेश पर अमल करता है। महात्माओं ने ये धर्मग्रंथ, वेद–शास्त्र क्यों और किसलिए लिखे? ये धर्मपुस्तकें हमें महात्माओं के रूहानी सफर के बारे में बताती हैं कि महात्माओं ने कठिन से कठिन मेहनत की, रातों को जागे, भूख–प्यास काटी और अपने जीवन काल में परमात्मा को अपने अंदर प्रकट किया। जिस तरीके और साधन से महात्माओं को परमात्मा मिला उन्होंने हमारे फायदे के लिए उसे अपने धर्मग्रंथों में दर्ज कर दिया कि **परमात्मा आपके अंदर है।**

आप जिस परमात्मा को दिन–रात खोज रहे हैं वह परमात्मा आपको पहाड़ों में नहीं मिलता, समुंद्र की तह में नहीं मिलता बेशक आप उसके रहने के लिए अच्छी से अच्छी जगह बना लें, चाहे जितनी मर्जी सफाई कर लें। परमात्मा अपना मंदिर खुद बनाकर इस शरीर के अंदर बैठा हुआ है अगर आप इस शरीर मंदिर के अंदर दाखिल हों इसे पवित्र करें तभी आप परमात्मा से मिल सकते हैं।

गुरु नानकदेव जी से लेकर गुरु गोबिंद सिंह जी तक दस गुरु साहिबानों ने ज्यादा से ज्यादा कष्ट सहकर हम जीवों को सुरत–शब्द का अभ्यास बताया। 'सुरत–शब्द' से भाव आत्मा का परमात्मा के साथ जोड़ है। आत्मा भी हमारे अंदर है और परमात्मा भी हमारे अंदर है लेकिन हम उससे जुड़े हुए नहीं हैं। जब लोग 'सुरत–शब्द' के अभ्यास को, गुरु नानक और कबीर की तालीम को भूल गए तो उनकी तालीम को ताजा करने के लिए बाबा सावन सिंह जी महाराज तन धारण करके संसार में आए।

महात्मा हमें कोई नई बात नहीं बताते, वे हमें बताते हैं कि परमात्मा का रास्ता किसी इंसान का बनाया हुआ नहीं है। परमात्मा ने खुद ही अपने मिलने के लिए रास्ता बनाया है, इसे कोई घटा–बढ़ा नहीं सकता। यह रास्ता उतना ही पुराना है जितना इंसान पुराना है।

सन्त–महात्मा हमें किसी समाज के साथ बाँधने के लिए नहीं आते। सन्त–महात्मा कोई नई समाज नहीं बनाते और न पहले की बनी समाज को तोड़ते हैं। वे हमें परमात्मा के साथ जोड़ने के लिए आते हैं। वे हमें बताते हैं कि देखो प्यारेयो! आप अपने रीति–रिवाज करते हुए समाज के नियम पालते हुए सुरत–शब्द योग का अभ्यास कर सकते हैं और **परमात्मा को अपने अंदर ही प्राप्त कर सकते हैं**।

हिन्दुस्तान में महाराज सावन सिंह जी ने गुरु नानकदेव जी की तालीम को घर–घर पहुँचाया। आप तन धारण करके विदेश नहीं गए थे लेकिन शब्द

रूप होकर आप अनेकों को दर्शन देते रहे। आपने जीवों को अपनी तरफ खींचा कि मैं इस जगह बैठा हूँ। महान सतगुरु ने संसार में आकर हमें छोटे से छोटे तरीकों से कहानियाँ सुना–सुनाकर समझाया कि हमने किस तरह का जीवन व्यतीत करना है। आपका परमात्मा आपसे बिछुड़ा हुआ है, आप उसे बाहर ढूंढ रहे हैं लेकिन **परमात्मा आपके अंदर है।**

सन्तों का अपना–अपना तरीका होता है कि किससे किस तरह काम लेना है। बाबा सावन सिंह जी ने दक्षिण भारत में बाबा सोमनाथ की ड्यूटी लगाई। आप सबको बाबा सोमनाथ की हिस्ट्री का पता है कि बाबा सोमनाथ ने अपनी जिंदगी में कठिन तपस्या की। किसी महात्मा की निन्दा कर लेना आसान है लेकिन उस जैसा जीवन बनाना और उतनी मेहनत करना बहुत ही मुश्किल है। बाबा सावन सिंह जी कई–कई दिन अंदर से बाहर नहीं निकलते थे, कम खाना खाते थे। आपने एक दिन संगत में कहा, ''मैंने कुछ नहीं किया यह बाबा जयमल सिंह जी की दया है।'' आपकी रसोई तैयार करने वाले बंता सिंह ने कहा कि आप कई–कई दिन भूख–प्यास काटकर अंदर से नहीं निकलते थे।

इसी तरह गुरु नानकदेव जी ने ग्यारह साल कंकड़–पत्थरों का बिछौना किया। कबीर साहब ने सारी जिंदगी खिचड़ी का आहार किया हल्का खाना खाया। मैं बताया करता हूँ कि किसी महात्मा की शरण में जाने से पहले यह जरूर देख लें! क्या इसने अपनी जिंदगी में कोई कमाई की है, कोई साधना की है? कबीर साहब कहते हैंः

माय मुंडो ते गुरु की जाते भ्रम न जाए
आप डुबा चों बेद में चेले दिए बहाए

पूर्व में पहले यह आम रिवाज होता था कि जब कोई औरत विधवा हो जाती तो उसका सिर मुंडवा देते थे ताकि लोगों को निशानी हो जाए कि अब यह बाँझ हो गई है बच्चे पैदा नहीं करेगी। ऐसे गुरु की माता पहले ही

विधवा क्यों न हो गई या उसे बाँझ रहना ही ठीक था ताकि पाखंड करके, एक्टिंग–पोजिंग करके लोगों की आत्मा के साथ खिलवाड़ न करता। हमारे वेद–शास्त्रों में जिन रीति–रिवाजों का कथन किया हुआ है वह सेवकों को भी उसी तरफ लगा देता है। वह न तो खुद अंदर जाता है, न ही उन्हें अंदर ले जाने का अधिकार रखता है। पाखंडी साधु से वेश्या अच्छी है क्योंकि वह किसी के साथ धोखा नहीं करती, उसके घर के बाहर बोर्ड लगा होता है कि मैं यह हूँ।

महान सन्त–सतगुरु बाबा सावन सिंह जी ने दक्षिण भारत में आत्माओं को जगाने के लिए, परमात्मा के साथ जोड़ने के लिए बाबा सोमनाथ से कहा। आपने महाराज कृपाल सिंह जी से कहा कि तूने संसार में जाना है। महाराज कृपाल ने अपने जीवन काल में पश्चिम का दृश्य देखा था कि आप अंग्रेज लोगों को सतसंग सुना रहे हैं। बाबा सावन सिंह जी ने कहा, ''हाँ ऐसा ही होगा।'' सन्त कृपाल सिंह ने समुंद्र की तह में और पहाड़ों की चोटियों पर जाकर अपने गुरुदेव का नाम रोशन किया। आपने सोते–जागते, बैठते–उठते अपने गुरु को गाया। कबीर साहब कहते हैंः

अग्नि लगी आकाश को झड़ झड़ पैंण अंगियार
सन्त न होते जगत में तो जल मरता संसार

परमात्मा हमेशा ही सन्त–महात्माओं के जरिए आकर अपनी आत्माओं की संभाल करता है, जिनके भाग्य में लिखा होता हैं उन्हें परमात्मा के साथ जोड़ता है। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थेः

जैसे माँ–बाप वैसे बच्चे।

बच्चों पर माता–पिता का असर होता है। महाराज सावन सिंह जी एक बादशाह की लड़की की मिसाल दिया करते थे। उस लड़की का किसी शहजादे के साथ प्यार हुआ, उन्होंने शादी का प्रोग्राम बनाया लेकिन दोनों के माता–पिता ने इस शादी का विरोध किया। लड़की ने कहा, ''इसमें

झिझकने की क्या जरूरत है, हम दोनों बाहर चले जाएंगे।'' उन दिनों आज की तरह ट्रेन वगैरहा के साधन नहीं थे। आमतौर पर लोग ऊँट की या बैल की सवारी किया करते थे। वह लड़की अपने घर से ऊँटनी ले आई, वे रात के अंधेरे में उस ऊँटनी पर बैठ गए। आगे एक छोटा सा नाला पड़ता था, उसमें पानी बह रहा था। लड़की ने शहजादे से कहा, ''इस ऊँटनी की लगाम खींच और फिर कहा कि इसकी माँ को आदत थी और इसे भी आदत है यह पानी में बैठ जाती हैं।''

कोई वक्त होता है कि किसी शब्द से ही हमारा दिल तब्दील हो जाता है। शहजादे के दिल में ख्याल आया कि पशु–पक्षियों का उनके बच्चों पर असर है तो क्या इंसानों पर नहीं होगा? आज यह औरत मेरे साथ निकल रही है कल इसके पेट से जो औलाद होगी, मेरी लड़की होगी अगर वह भी किसी के साथ ऐसे ही चली जाएगी तो लोग मेरी बेइज्जती करेंगे कि यह बदमाश है अच्छा आदमी नहीं।

शहजादे ने बहुत सोचकर उस लड़की से कहा कि मैं महल में कोई खास चीज भूल आया हूँ, चलों हम लेकर आ जाएं अभी काफी रात बाकी है। जब उस महल के पास वापिस पहुँचे तो शहजादे ने हाथ जोड़कर लड़की से कहा, ''भाग्यवान! हम बहुत बुरा काम कर रहे थे, तू भी बदनाम होती और मैं भी बदनाम होता, हम जो औलाद पैदा करते वह भी बदनाम होती। हम बुरे कर्म से बच गए हैं, तू अपना जीवन अपने महल में व्यतीत कर और मैं अपने महल में व्यतीत करता हूँ।''

मैं कुछ दिन आपके आगे सूफी सन्त शेख फरीद की बाणी पर सतसंग करूंगा। शेख फरीद को अपनी माता से ही भक्ति करने का शौक पैदा हुआ था। फरीद खेल–कूद में रहता था, उनकी माता नामलेवा थी अच्छी अभ्यासन थी। माता फरीद से हमेशा कहती, ''बेटा! भजन किया कर खुदा की बंदगी किया कर।'' फरीद ने कहा, ''खुदा खाने के लिए शहद,

गुड़ या चीनी देगा?'' फरीद की माता ने कहा, ''बेटा! अगर हम खुदा की भक्ति करते हैं तो हम किसी चीज के मंगते नहीं रहते। खुदा हमें खाने के लिए शहद, चीनी सब कुछ ही देता है और सबके काज सँवारता है।'' शुरु–शुरु में भक्ति मार्ग में लगना मुश्किल है लेकिन बाद में इससे हटना भी मुश्किल हो जाता है।

आप महात्माओं की कहानियाँ पढ़कर देख लें! उन्होंने हँसते–हँसते दुःख बर्दाश्त किए लेकिन भक्ति के स्वाद को छोड़ नहीं सके। कुछ दिन फरीद की माता जमीन पर बोरी बिछा देती और फरीद के ऊपर कपड़ा डालकर कहती, ''बेटा! तू आँखें बंद करके बैठ, खुदा चीनी रखकर जाएगा तू उठकर खा लेना।'' कुछ दिन तक माता कटोरी में चीनी डालकर रख देती और अपनी तवज्जो देती रही, आखिर तवज्जो से सुरत अंदर जा लगी। जब सुरत अंदर जाकर लगी तो फरीद ने उठकर कहाः

शक्कर खंड नवात गुड़ माखो माजा दुध
सब्बे वस्तु मिट्ठियाँ पर रब न पुजण तुध

माता! मैं मानता हूँ कि शहद मीठा है, गुड़ मीठा है और दूध भी मीठा है लेकिन जो स्वाद आज नाम में आया है वह स्वाद इन चीजों में नहीं। ये चीजें आरजी हैं, नाम सदा के लिए है। शेख फरीद ने अपने जीवन काल में बहुत सारे लोगों को उपदेश दिया।

किसी औरत के पाँच लड़के थे। उस औरत ने अपने लड़कों से कहा अगर हम कोई कारोबार, व्यापार या खेती करें तो बहुत मुश्किल है। मैं और मेरा पति इसी तरह करते रहे हैं, मैं जो करतब करती रही हूँ वह तुम्हें भी बताती हूँ। औरत के ऊपर लोग कम शक करते हैं। वह किसी घर में जाकर खूब बातें करती। हमें पता है कि बीबियाँ जल्दी विश्वास कर लेती हैं, वह औरत उस घर की औरतों से धन–पदार्थ या सोने का भेद ले लेती और उस घर में हींग का निशान लगा आती। आकर अपने पाँचों लड़कों

से कहती कि मैं तालें में हींग लगा आई हूँ। जहाँ तुम्हें हींग की महक आए समझ लेना कि वहाँ धन–पदार्थ और सोना इत्यादि है। लड़के उस घर में जाकर सामान चोरी करके ले आते थे।

इस कहानी का तात्पर्य यह है कि जब हम नाम का रास्ता छोड़ देते हैं 'सुरत–शब्द' का अभ्यास छोड़ देते हैं तो हमारे अंदर हौमें–हंगता अहंकार पैदा हो जाता है। हौमें के पाँच बेटे काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार हैं, ये आकर हमें लूट लेते हैं। कबीर साहब कहते हैंः

मुसाफिर जागते रहना नगर में चोर आते हैं
जरा सी नींद गफलत में देख झटपट गठड़ी उठाते हैं

गुरु नानकदेव जी ने भी कहाः

जागो जागो सुत्तयो चलया बन्जारा

देखें! आपका भाई सब कुछ हारकर इनके आगे हथियार डालकर चला जाता है। अगर अंदर अहंकार आया तो ये पाँचों ही आकर लूट लेते हैं। इस बाणी में फरीद साहब हमें अच्छी मिसालें देकर समझा रहे हैं:

जित दिहाड़ै धन वरी साहे लए लिखाय।।
मलक जे कंनी सुणीदा मुँह देखा ले आय।।

फरीद साहब कहते हैं, ''जिस समय आत्मा ने शरीर में प्रवेश किया उसी समय परमात्मा ने इसके वापिस जाने का दिन मुकर्रर कर दिया। समय के मुताबिक ही वह आकर अपनी शक्ल दिखा देता है कि मैं आ गया हूँ।'' महात्माओं ने उसे कहीं धर्मराज, कहीं इज़्राईल फ़रिश्ता भी कहा है।

जिस तरह हमारे हिन्दुस्तान में आमतौर पर रिवाज है कि जब हम लड़की की शादी का दिन मुकर्र करते हैं कि किस तारीख पर किस समय आना है। दूल्हा जिसके साथ लड़की की शादी होनी है वह किसी तरह भी उस वक्त को मिस नहीं करता, साहे (विवाह का निश्चित महूर्त) के

मुताबिक आ जाता है। बेशक लड़की रोए–चिल्लाए चाहे कुछ भी करे दूल्हा उसके रोने की आवाज पर तरस नहीं करता और वह उस लड़की को लेकर चला जाता है। हजरत वारिस शाह ने कहा थाः

हीर रूह ते इज़्राईल खेड़ा जेहड़ा लेन्दा ही रूह नूं भाया ई

फरीद साहब कहते हैं, ''जिस दिन आपकी आत्मा ने शरीर में प्रवेश किया था उसी दिन मुकर्रर हो गया था कि मौत कौन सी जगह आनी है, कौन सा दिन होगा, क्या समय होगा और कौन आएगा? आत्मा को लेने के लिए दो ही ताकतें आती हैं, हमने नाम लिया है तो 'शब्द गुरु' आता है उसने हमारी रक्षा करनी है, वह हमारी आत्मा को शरीर में से लेकर जाएगा अगर गुरु नहीं नाम नहीं तो मौत का फरिश्ता आकर ले जाएगा।''

हम अपनी जिंदगी में एक नहीं हजारों वाक्यात देखते हैं कि अच्छी कमाई करने वाले सतसंगी कई–कई दिन पहले बता देते हैं कि मैंने कब जाना है। आला दर्जे के सतसंगी कई महीने पहले ही बता देते हैं कि मैंने किस महीने में जाना है।

बाबा सावन सिंह जी का नामलेवा सुंदरदास मेरे पास बीस साल रहा। वह अच्छा अभ्यास करता था, हम आठ–आठ घंटे खेत में धूना लगाकर बैठ जाते थे। एक दिन उसकी टाँग के ऊपर जलती हुई लकड़ी गिर गई और उसकी टाँग जल गई लेकिन उसे पता नहीं लगा। जब अभ्यास से उठा तो कहने लगा, ''आज अभ्यास में जितना रस आया है उतना रस पहले कभी नहीं आया।''

सुंदरदास ने जिस समय चोला छोड़ा उस समय सैंकड़ो ही आदमी बैठे हुए थे। उसने छह महीने पहले ही बता दिया था कि मुझे लेने के लिए महाराज सावन और कृपाल आएंगे। उसने अपना कफ़न भी पहले तैयार करवा लिया था, उसने कुछ घंटे पहले चेतावनी दी कि दरबार खुला है और मैं अपनी बहन को भी लेकर जाना चाहता हूँ। उसकी बहन नामलेवा

नहीं थी, जब उसने सुना तो वह मौत से डरती हुई बाहर चली गई। अब आप सोचकर देख सकते हैं **सतसंगी के दिल में उस समय इतनी खुशी होती है जितनी उसे अपनी शादी के समय भी नहीं होती।** शादी के लिए भी बंदा सोचता है कि मुझे बंधन पड़ रहा है।

महात्मा सुनी–सुनाई नहीं बताते हम अनेकों ही वाक्यात देखते हैं कि गुरु की चेताई हुई आत्मा को जिसे नाम मिला हुआ है उसे काल कभी भी लेकर नहीं जा सकता। गुरु की यही पक्की पहचान है कि वह अपनी आत्मा को अंदर और बाहर संभालता है।

बाबा सावन सिंह जी को शरीर छोड़े हुए काफी समय हो गया है लेकिन आप आज भी आत्माओं की संभाल कर रहे हैं। हमारे दयालु गुरु कृपाल को भी सांसारिक यात्रा पूरी करके गए हुए काफी साल हो गए हैं। मेरे पास अनेकों तार, पत्र आते हैं जिसमें प्रेमी बताते हैं हमने देखा है कि वे पशु–पक्षी की भी संभाल कर रहे हैं। प्रत्यक्ष को क्या प्रमाण है?

जिंद निमाणी कढीऐ हड्डां कूँ कड़काय।।
साहे लिखे न चलनी जिंदू कूँ समझाय।।

अब आप कहते हैं, ''उस इज़्राईल फ़रिश्ते की किसी के साथ कोई दुश्मनी नहीं। उसकी ड्यूटी है वह अपने समय पर जरूर आता है जिसने पहले से तैयारी कर रखी है उसे कोई तकलीफ नहीं वह आत्मा खुशी–खुशी गुरु के साथ जाती है। जिसकी पहले से तैयारी नहीं वह उस समय गिरगिट की तरह रंग बदलता है।''

हथ मरोड़े तन तपे साहेब होया सेक

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं कि वह गिरगिट की तरह रंग बदलता है, कभी पीला तो कभी सफेद होता है। कभी कहता है कि अच्छा

हकीम बुलाओ। कभी कहता है कि बेटों को बुलाओ। वह ऐसा कुछ ही करता है, रोता है चिल्लाता है।

मेरी अपनी फैमिली का वाक्या है। सारे सन्तों के साथ ऐसा ही बीता है कि घर के लोग उन्हें कम ही मानते हैं। मैंने महाराज जी के कहने पर काफी सारी जायदाद छोड़ दी थी। मेरे परिवार के लोगों के दिमाग में बार–बार यही आया कि कृपाल ने इसके सिर पर जादू कर दिया है। मैं कभी–कभी हँसकर कहता कि वह कौन सी जायदाद ले गया? आखिर उनके साथ मेरी विरोधता यहाँ तक बढ़ गई कि मैंने उनके साथ दुनियावी रिश्ता खत्म कर दिया। मैंने उनसे कहा कि मेरे गुरुदेव कहते हैं, ''सन्त, सतसंगी के पशु–पक्षी तक की संभाल करते हैं।'' आप लोग इंसानी जामें में हैं वह महान हस्ती आपकी संभाल जरूर करेगी।

जुलाई में मेरा बड़ा भाई बीमार नहीं था, अचानक चोला छोड़ने लगा। उसने कहा कि चार कसाई मेरे पीछे हैं, उन्होंने मुझे पकड़ लिया है। आप सोच सकते हैं कि वे कसाई कौन थे और क्यों आए? अचानक ही उसने मेरे गुरुदेव का नाम लिया कि महाराज जी ने आकर मुझे छुड़वा लिया है। उसने मरते हुए कहा, ''तुम लोग अजायब सिंह से नाम लो।'' सोचकर देखें! किस तरह उस महान हस्ती ने उसे आकर छुड़ाया।

इसी तरह हमारे आश्रम में भागसिंह विरक एक सेवादार है, वह संगत की सेवा करता है। काफी समय पहले वह खुद परेशान था और लोगों से लड़ाई–झगड़ा करके उन्हें भी परेशान किया करता था। वह अपने पिता की भी यही हालत बताया करता है। जब उसके पिता का अन्त समय आया तो उसके पिता ने कहा कि मेरी कमर पर लोहे के सरिये लगा रहे हैं। उस समय वे दोनों भाई वहाँ खड़े थे उन्होंने देखा कि उनके पिता की कमर पर गरम सरिये के निशाान थे।

कुछ दिन बाद उसकी माता की मौत हुई वह नामलेवा थी। उसने कहा छिड़काव कर दें, मेरे गुरु आ रहे हैं। लड़कों ने कहा कि हमें गुरुदेव दिखाई नहीं दे रहे। माता ने कहा, ''तुम्हारी वह आँखें नहीं।'' महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''मियाँ–बीवी के भी एक जैसे कर्म नहीं होते।''

फरीद साहब प्यार से कहते हैं, ''जिन्होंने साहे के मुताबिक तैयारी नहीं की उन्हें तकलीफ होती है लेकिन वह छोड़ता किसी को भी नहीं।'' हम अपने जीवन काल में कहते हैं कि गुरु की क्या जरूरत है, नाम की क्या जरूरत है? हम लापरवाह हुए फिरते हैं लेकिन मौत का देवता किसी की लिहाज नहीं करता। माता–पिता, बहन–भाई पास ही खड़े हुए रोते हैं।

कबीर साहब कहते हैं, ''प्यारेया! जब तू इस संसार में आया था उस समय तू रो रहा था क्योंकि तेरी लिव परमात्मा से टूट गई थी अगर तू ऐसी करनी करे कि घर वाले और रिश्तेदार बैठकर आँसू बहाए और तेरे दिल में खुशी हो और तू हँसकर संसार से जाए।''

जब तुम आए जगत में, जग हँसा तुम रोए
ऐसी करनी कर चलो, तुम हँसो जग रोए

जिंद वहुटी मरण वर लै जासी परणाय।।

जहाँ लड़की का रिश्ता तय किया होता है वे लड़की को जरूर लेकर जाते हैं इसी तरह हमारी आत्मा का जो समय मुकर्रर है उस समय मौत का फरिश्ता जरुर आता है और लेकर चला जाता है। यह रोती है, दुःख उठाती है लेकिन उस समय सहारा देने वाला कोई नजर नहीं आता। आँखों से पानी अपने आप ही बहने लगता है। तुलसी साहब कहते हैंः

लगे टिकटिकी दिखे न भाई, वहाँ समय की कौन सुनाई

बाहर भाई–बहन के विछोड़े का दुख है अंदर का हाल बता नहीं सकता कि मुझे कितनी तकलीफ है। आँखें फड़कनी बंद हो जाती है डॉक्टर कहते हैं अब तो यह थोड़ी देर का ही है आप इसे घर ले जा सकते हैं।

आपण हत्थीं जोल कै कै गल लग्गै धाय

अब आप कहते हैं कि वे ही समझदार हैं जो वक्त की कद्र करते हैं। समय रहते मौत से बचने का इंतजाम करते हैं। हम आमतौर पर देखते हैं कि जब मौत आती है तब पहले पैर सुन्न हो जाते हैं, पैरों में कोई दर्द नहीं होता, टाँगों में भी जान नहीं होती फिर कमर तक धड़ सुन्न हो जाता है खून बाँहों से पीछे हटना शुरु हो जाता है। धड़ से भी धीरे–धीरे ऊपर को जाती है आखिर गले में आ जाती है जिसे घोंघरू बजना कहते हैं। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं अगर उस समय भी इंसान किसी पूरे गुरु को याद करे तो वह आकर संभाल कर लेता है। महात्मा कहते हैं कि ठीक तो यह था कि इसने पहले ही तैयारी की होती। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

मोया जित घर जावणा जीवंदया मर मार

भ्रावा! जहाँ मर कर जाना है, तू जीते जी वहाँ क्यों नहीं चला जाता?

वालों निक्की पुरसलात कंनी न सुणीआय।।
फरीदा किड़ी पवंदीई खड़ा न आप मुहाय।।

फरीद साहब कहते हैं, ''तूने जिस रास्ते से जाना है वह रास्ता बाल से भी बारीक है, तलवार जितना तीखा है, दुःखों और मुसीबतों से भरा हुआ है। वहाँ तू अकेला होगा, तेरे साथ कोई नहीं होगा। अफसोस! सन्तों ने आकर बहुत समझाया कि आप लोग जागें, क्यों इन्द्रियों के भोगों में अपने जीवन को बर्बाद कर रहे हैं? लेकिन उन मालिक के प्यारों की आवाज कोई नहीं सुन रहा।''

फरीदा दर दरवेसी गाखड़ी चलां दुनीआं भत।।
बनं उठाई पोटली कित्थै वंञां घत।।

अब आप प्यार से बयान करते हैं, ''हम नाम प्राप्त करते हैं सतसंगी बनते हैं, मालिक के नाम पर फकीर बनते हैं। वही फकीर है वही सन्त

है जो अभ्यास करता है मालिक के साथ जुड़ जाता है अपनी सुरत को मालिक के दरबार में पहुँचा देता है। जिसने आत्मा और परमात्मा की खोज कर ली वह परमात्मा रूप हो जाता है। कबीर साहब कहते हैंः

राम सन्त में भेद कुछ नाहीं।

जब हम भक्ति मार्ग में निकलते हैं फकीरी धारण कर लेते हैं कि हम जरूर अभ्यास करेंगे, नाम जपेंगे और दुनियादारी में नहीं फसेंगे लेकिन बहुत शर्म की बात है कि हम फिर दुनियादारी में फँसकर भक्ति मार्ग को छोड़ देते हैं। हम भी दुनियादारों की तरह पापों की गठरी सिर पर रख लेते हैं। हमारे यार–दोस्त, मित्र–रिश्तेदार ताने भी देते हैं कि यह कल तक त्यागी था इसने घर–बार छोड़ा हुआ था लेकिन आज फिर हमारी तरह दुनिया में आ गया है। फकीरी कोई छोटी सी नहीं होती यह बहुत मुश्किल होती है। मैं तो कहूँगा फकीरी धारण करने से पहले कई दिन, कई महीने, कई साल सोचने की जरुरत है। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

दरवेशा दा जीवणा रूक्खां दी जीराण।

फकीर का दिल पेड़ की तरह होता है। कोई पेड़ को पानी दे, कोई उसे काटे वह अपनी छाया किसी से दूर नहीं करता। हजरत बाहू कहते हैंः

ज्योंदया मर रहिए तां वेश फकीरी बहिए हू
जे कोई कड्डे गाल उलांभा जी जी ओहनूं कहिऐ हू
जे कोई सिट्टे गुद्ड़ कूड़ा वांग अरूड़ी रहिए हू

भ्रावा! लोगों के और परिवार वालों के ताने–मेहणे, निन्दा–चुगली सुननी पड़ती है। सबको जी, जी कहना पड़ता है। अब यह तो फेंकने वाले की मर्जी है चाहे वह आम, संतरा फेंक कर जाए या छिलका फेंककर जाए। कबीर साहब कहते हैंः

कोई आवे भाव ले कोई आए अभाव
सन्त दोहू को पोसते भाव न गिने अभाव

बाबा सावन सिंह जी कहा करते थे कि कोई सतसंग सुनने के लिए आता है, कोई नाम जपने के लिए और अपनी आत्मा को खुराक देने के लिए आता है तो कोई जूते चुराने के लिए आ जाता है। लेकिन सन्त–महात्मा दोनों को ही प्यार से देखते हैं, दोनों से ही प्यार करते हैं। वह यह नहीं देखते कि ये किस काम के लिए आया है। कुछ दिन हमारे अंदर वैराग आता है तो हम रात को अभ्यास के लिए उठते हैं लेकिन फिर मन हमारे ऊपर जोर डाल देता है। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

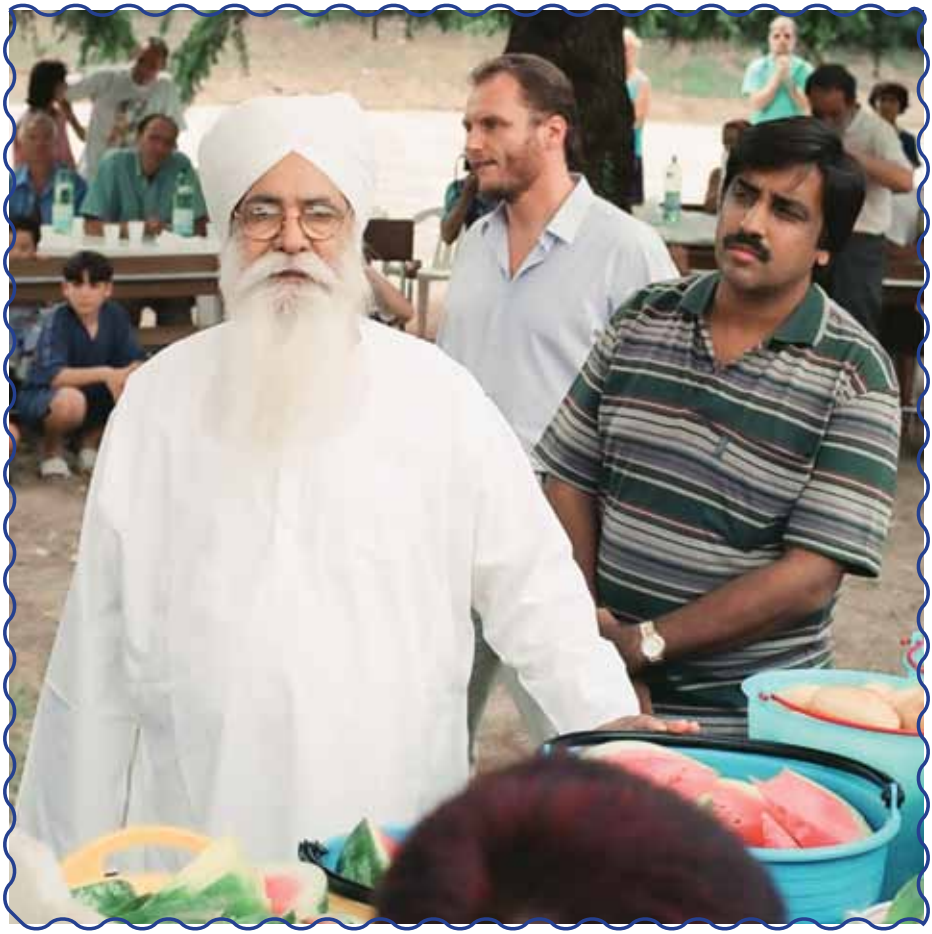

जो जो चोर भजन के प्राणी से से दुख सहे
आलस नींद सतावे उनको नित नित भ्रम बहे
काम क्रोध के धक्के खाहे लोभ नदी में डूब मरे

फकीरी बहुत मुश्किल है। फरीद साहब ने अपनी जिदंगी में बहुत तप किए थे, आप बारह साल जंगलों में फिरते रहे आपने बहुत सारे धूने भी तपाए। साधु विषय–विकार छोड़ देते हैं लेकिन इस युग में प्राण अन्न में है, अन्न नहीं छोड़ सकते। एक जगह फरीद साहब कहते हैंः

फरीदा मौतों भुख बुरी, राती सुत्ता खाके तड़के फेर खड़ी।

फरीद साहब चलते हुए जा रहे थे आपको भूख लगी हुई थी, आपने किसी से खरबूजे माँगे। उसने कहा, ''तुझे खरबूजे किस बात के दूं तू अच्छा फकीर है लोगों से माँगता फिरता है?'' फरीद साहब वहाँ से चुप करके चले गए लेकिन फकीरी को लानत देते हैं अफसोस! मैं अपना पेट भी नहीं पाल सका? अगर मैं कमाई करता मेहनत करता तो अपना हर स्वाद पूरा कर सकता था और मैं अनेकों को भी अन्न–पानी दे सकता था, मैं जंगल में आकर लोगों के ताने–मेहणे झेल रहा हूँ।

मालिक की मौज खरबूजे के बाग में सारे खरबूजे सिरियाँ बन गई, इंसान के सिर ही सिर दिखाई देने लगे। बाग का रखवाला घबरा गया कि मेरा मालिक जब आएगा वह क्या कहेगा? कुछ समय बाद बाग का मालिक आया तो उसने पूछा यह क्या हुआ? रखवाले ने कहा कि मैं कुछ नहीं कह सकता यहाँ एक फकीर आया था उसने खरबूजे माँगे थे लेकिन मैंने उसे नहीं दिए। वह कुछ नहीं बोला उसने उफ तक नहीं की वह अपने आपको लानतें मारता हुआ यहाँ से चला गया।

बाग का मालिक भागकर फकीर के पीछे गया और बोला, ''महाराज जी! पता नहीं क्या हुआ? मैंने जमीन किराए पर ली हुई है, नौकर रखे हुए हैं, आप दया–मेहर करें मैं भूखा मर जाऊंगा।'' फरीद साहब ने हँसकर

कहा, ''तुझे ऐसे ही लगा होगा तू जाकर देख, वह खरबूजे ही बने हुए होंगे। तू यह ध्यान रखना उनमें से एक खरबूजे की शक्ल सिर की ही रहेगी।''

बाग का मालिक जब बाग में आया तो उसने सारे खरबूजे बने देखे। बाग के मालिक ने फरीद साहब से पूछा, ''खरबूजे सिरियां क्यों बनी?'' फरीद साहब ने कहा, ''तू उस सिर से ही पूछना जब तू उससे पूछेगा तो वह बताएगा।'' आखिर एक जो सिर रह गया था मालिक ने उससे पूछा ऐसा क्यों हुआ? उस सिर ने कहा, ''हमारे ऊपर परमात्मा मेहरबान हुआ था, वह बहुत कमाई वाला फकीर था, नाम का रसिया था। परमात्मा ने हमें मौका दिया था हम इसलिए सिर बने थे कि हम थोड़ा बहुत भी इस फकीर की रसना पर चढ़ जाते तो हम सबकी मुक्ति हो जाती।''

हम जिंदगी में कई बार खरबूजे बने और लोगों के पेट में जाकर हजम हुए और कई बार तू खरबूजा बना तुझे हम बाजार में बेचते रहे, तू लोगो के मेदे में जाता रहा। यह तो परमात्मा ने बहुत सुंदर मौका दिया था अगर अब वह फकीर मिले तो हम जरूर उससे अंदर का भेद लें और अपने जीवन को सफल करें।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि सन्तों को परमात्मा की तरफ से रियायत होती है कि वे जिस पशु के ऊपर सवारी कर लें वह पशु चौरासी में नहीं जाता इंसानी जामें में आता है। वह जिस पेड़ का फल खा लें उसे भी यह रियायत मिलती है कि वह इंसानी जामें से नीचे चौरासी में नहीं जाता, उसे भगवान की तरफ से जरूर रियायत मिलती है।

मालिक के प्यारे महात्मा हमें प्यार से बताते हैं कि फकीरी आसान नहीं। वही फकीर है जिसे परमात्मा ने सब कुछ दिया हो लेकिन वह फिर भी सब्र में रहे। बड़े–बड़े उच्चकोटि के महात्मा आए, संसार ने उन्हें बहुत कष्ट दिए लेकिन उन्होंने किसी को बद्दुआ नहीं दी। कबीर साहब कहते हैं:

साधू स्यों झगड़ा भला मनमुख से नहीं प्यार

जो परमात्मा की भक्ति नहीं करते उनके साथ प्यार करना घाटेमंद है, उनका प्यार हमें चौरासी में ले जाएगा। बेशक हम साधू के साथ झगड़ते भी हैं तो भी परमात्मा दया भेजता है। साधू का क्रोध दूध के उबाले की तरह होता है, साधू के क्रोध से भी दया प्राप्त होती है।

किझ न बुझै किझ न सुझै दुनीआं गुझी भाह।।

फरीद साहब कहते हैं, ''यह दुनिया गुझी आग है। यह गुझी आग तृष्णा, इन्द्रियों के भोग हमें बंदर की तरह नचा रहे हैं। बाहर धूँआ निकलता हुआ नजर नहीं आता। इन्द्रियों के भोग हमें बाहर से आकर नहीं चिमड़ते ये सब अंदर ही है। मेरे ऊपर परमात्मा ने दया की, मेरा गुरु के साथ मिलाप करवाया, उस साईं ने मेरे ऊपर मेहर की मैं इस गुझी आग से बच गया हूँ।''

साईं मेरै चंगा कीता नाहीं तहँ भी दझां आह।।
फरीदा जे जाणां तिल थोड़ड़े संमल बुक भरी।।
जे जाणा सौह नंढड़ा तां थोड़ा माण करी।।

फरीद साहब कहते हैं, ''अगर मुझे यह पता होता कि जिंदगी के श्वांस बहुत थोड़े हैं तो मैं इन्हें संभालकर खर्च करता, इनसे परमात्मा की भक्ति करवाता। मैं इस शरीर में आकर किसी भी धन–पदार्थ और हुकूमत का मान–अहंकार नहीं करता। परमात्मा गरीबों का है मजलूमों का है और उनका है जो उस परमात्मा के बन जाते हैं।''

महात्मा बानी में बताते हैं कि यह जीवन अमूल्य है। इसमें बैठकर जो भी श्वांस आता है उसे परमात्मा के लेखे में लगाएं। हमें उठते–बैठते, चलते–फिरते सिमरन में समय लगाना चाहिए ताकि अंदर से जो भी श्वांस आए सिमरन का ही आए। हमारा हर श्वांस परमात्मा के लेखे लगे, पता नहीं फिर इस जीवन का मौका मिले या न मिले।

***

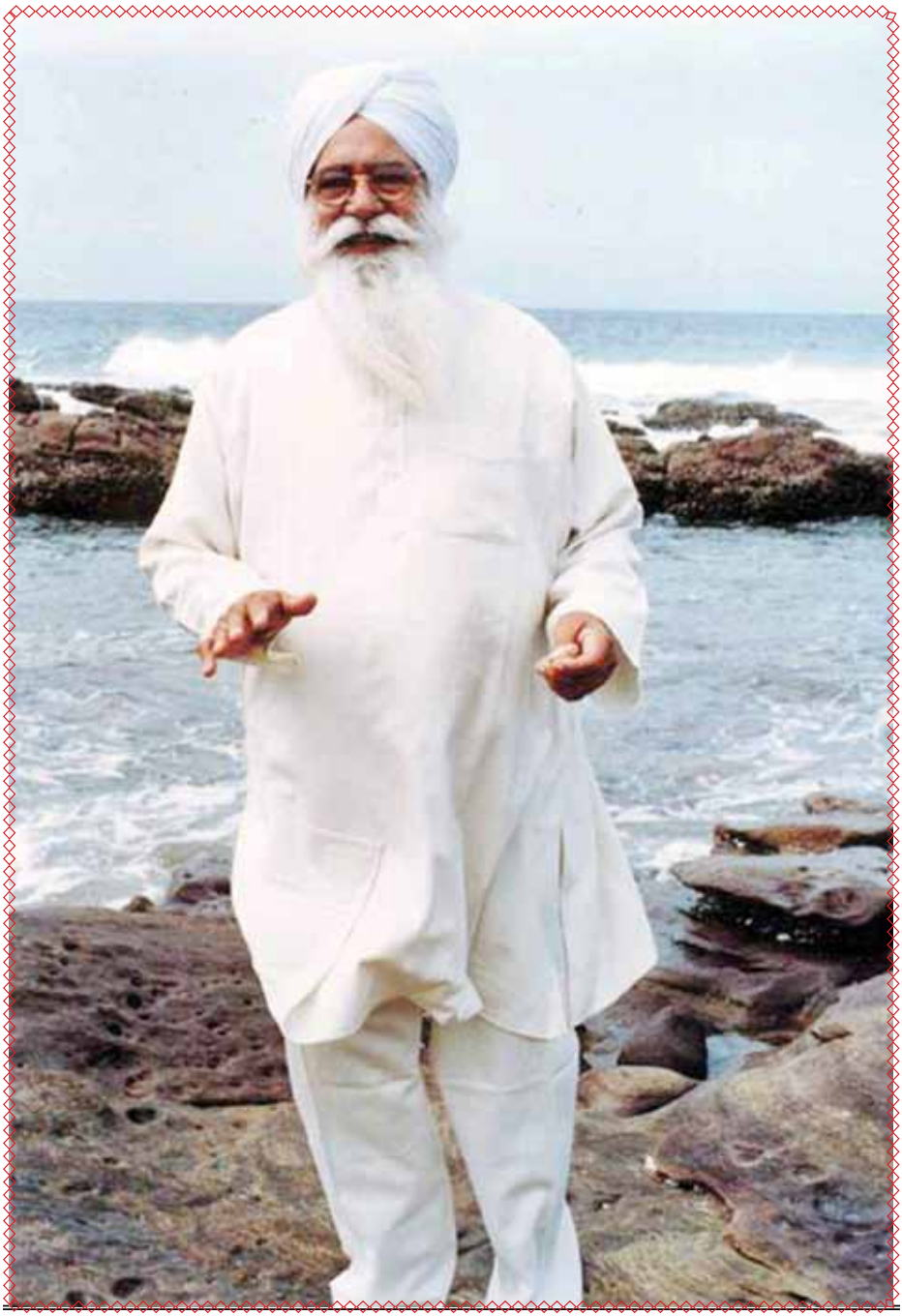

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा एक संदेश

08 जनवरी 1992

परोपकार

S.N0 255

मुम्बई

मैं अपने गुरुदेव परमात्मा सावन–कृपाल का अति धन्यवादी हूँ जिन्होंने हमें अपनी भक्ति का दान दिया। हम जुबान से उनकी महिमा ब्यान नहीं कर सकते। सन्तमत परियों की कहानी नहीं यह एक सच्चाई है। औरत–मर्द, बच्चा–बूढ़ा, हिन्दु–मुसलमान, सिक्ख या ईसाई कोई भी भक्ति करके इस अमोलक धन को प्राप्त कर सकता है। परमात्मा किसी कौम, मजहब या मुल्क की पर्सनल जायदाद नहीं, परमात्मा उसी का है जो अपने दिल में परमात्मा को जगह देता है।

सहजो बाई अपनी बानी में कहती है, ''चाहे मैं सारी धरती का कागज बना लूं, सारी वनस्पति की कलम बना लूं चाहे सारे समुंद्रो की स्याही बना लूं फिर भी मैं गुरु की महिमा ब्यान नहीं कर सकती।'' हमारे शहन्शाह महाराज कृपाल सिंह जी सदा ही यह कहा करते थे, ''जो काम एक इंसान कर सकता है वही काम दूसरा इंसान भी कर सकता है।'' यह उन महात्माओं का कहना है जो अंदर जाकर उस सच्चाई को अपनी आँखों से देख लेते हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

कित मुख गुरु सलाहिए गुरु करण कारण समरथ

गुरु करण–कारण समरथ है। बुल्लेशाह ने कहा है:

गुरु जो चाहे सो करदा है, गुरु खाली भाँडे भरदा है

हम दुनियादार दुनिया की वस्तुएं माँगने में लगे हुए हैं। हमनें बर्तन दुनिया की वस्तुओं के लिए बनाए हुए हैं लेकिन सन्त इस संसार में रूहानी दौलत लेकर आते हैं। रूहानियत के ग्राहक उनसे अमूल्य नाम प्राप्त करके मालोमाल हो जाते हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

जन परोपकारी आए जियादान दे भक्ति लायन हर स्यों लैंण मिलाए।

सन्त–महात्मा मुक्त पुरुष होते हैं वे संसार में **परोपकार** के लिए आते हैं। महाराज जी कहा करते थे, ''जेल में सुपरडेंट और डॉक्टर भी जाते हैं लेकिन वे आजाद होते हैं, वे कैदियों की देखभाल के लिए जाते हैं इसी तरह सन्त इस अशान्ति की दुनिया में तपते दिलों पर नाम के छींटे मारने के लिए आते हैं, वे हमें अपनी आत्मा का दान देते हैं; उनका यह **परोपकार** ब्यान से बाहर होता है।''

परमात्मा ने संसार में हर कौम को संदेश देने के लिए अनुभवी पुरुष भेजे। उन्हें जो सच्चाई अनुभव के द्वारा प्राप्त हुई उन्होंने उस सच्चाई को अपने जीवनकाल में खूब बाँटा और उसकी चर्चा धर्मग्रन्थों में भी कर गए कि सतसंग करना क्यों जरूरी है? सतसंग में हमें अपनी गलतियों का पता लगता है, मन के ऊपर संगत का असर बहुत जल्दी होता है। नाम अमोलक है, हम नाम की दौलत को किसी खास किस्म का लिबास पहनकर या जोर से प्राप्त नहीं कर सकते। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

छोड़ो वेश भेख चतुराई दुविधा ऐह फल नाहीं जिओ।

वेश छोड़ दें। सफेद, काला या भगवा पहनने से आत्मा के ऊपर कोई फर्क नहीं पड़ता। जीवित महापुरुष नाम की महिमा गाते हैं, जब आप किसी जीवित महापुरुष के पास जाएंगे तो वह आपको भक्ति का अमोलक धन देंगे। भक्ति काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की नाशक है और सच्चे सुख, सच्ची इज्जत की दाता है। जीवित महापुरुष इस संसार में आते रहते हैं, जो संदेश उनसे पहले आए हुए महात्मा लिखकर छोड़ जाते हैं वे उस संदेश को ताजा कर जाते हैं।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''सन्तमत कोई नई मत नहीं यह पुरातन से पुरातन और सनातन से सनातन है। सनातन का मतलब जो आदि–युगादि से चला आ रहा है।'' कबीर साहब कहते हैं:

ऐह मन उलट सनातन होया

वर्तमान युग में महाराज सावन सिंह जी हम भूले हुओं को संदेश देने के लिए आए। जितनी देर अनुभवी पुरुष इस समाज में रहते हैं दुनिया को सही तालीम मिलती रहती है, सच का दान मिलता रहता है। सारी कौमें प्यार से मिलकर परमात्मा की भक्ति कर लेती हैं लेकिन जब अनुभवी पुरुष चले जाते हैं तो दुनिया के लोग अपने पेट, अपनी मान–बड़ाई की खातिर सन्तों की तालीम को मजहब, कौम की शक्ल दे देते हैं।

सन्त–महात्माओं का संदेश कुल आलम के लिए होता है इसे किसी खास मुल्क या सूबे में बंद कर देना ठीक नहीं। जब अनुभवी पुरुषों की कमी होती है तो मालिक फिर अपने किसी प्यारे को भेज देता है और वह आकर उस तालीम को ताजा कर जाता है। महाराज कृपाल कहा करते थे, ''गद्दियाँ महन्तियां चलती रहती हैं लेकिन सच के चाहवानों को सच की पूँजी नहीं मिलती, प्यासी आत्माओं की प्यास नहीं बुझती।''

वर्तमान युग में जब दुनिया कबीर साहब, गुरु नानकदेव जी, रविदास जी के संदेश को भूल गई तो महान सतगुरु संसार में आए और उन्होंने सन्तों की उसी तालीम की परम्परा चलाई। सतसंग जारी किया नाम का प्रचार किया और जीवित महापुरुष से मिलने के फायदे बताए। छोटे–छोटे उदाहरण देकर हमारे भूले मन को परमात्मा की तरफ लगाया।

जब ऐसे महात्मा संसार में आते हैं तो दुनियादार लोग उनकी बहुत विरोधता करते हैं। सभी महात्माओं के साथ ऐसा होता रहता है लेकिन वे बेपरवाह होते हैं उन्हें परमात्मा के ऊपर कमाल का भरोसा होता है। उन्हें पता होता है कि परमात्मा के हुक्म के बिना पत्ता तक नहीं हिलता इसलिए वे निन्दा करने वाले और प्रशंसा करने वाले की परवाह किए बिना बीच का रास्ता इख्तियार कर लेते हैं।

हमारे बहुत ऊँचे भाग्य थे अगर वे हमारे ऊपर दया न करते तो हम उनकी याद में बैठ ही नहीं सकते थे, ये उनकी ही दया है जो हम उनकी याद में बैठे हैं। हम सब जानते हैं कि हम यहाँ किस मकसद के लिए इकट्ठे हुए हैं? मेरा आप सबको यही सुझाव है कि आप जिस मकसद के लिए यहाँ आए हैं उसे पूरा करें। आपने शान्त मन से ज्यादा से ज्यादा समय भजन–सिमरन और सतसंग में देना है। कबीर साहब कहते हैं:

मन दिया कहीं और को तन साधां के संग
कहे कबीर कैसे लग्गे कोरी गज्जी रंग

अगर तन यहाँ बैठा है लेकिन मन बाजारों में फिरता है तो आत्मा के ऊपर किस तरह रंग चढ़ेगा? हम जिस तरह तन को यहाँ लाए हैं उसी तरह हमने मन को भी हाजिर रखना है ताकि हम कोई फायदा उठा सकें।

आप सबको पता है कि फ्लाईट लेट थी इसलिए मैं काफी लेट पहुँचा। आपने बहुत देर इंतजार की मैं उसकी कद्र करता हूँ क्योंकि मेरे मन में भी आपसे मिलने की चाह थी। सन्तों को संगत अपनी जान से भी ज्यादा प्यारी होती है। आपको पता है कि तन के लिए साधन की जरूरत होती है लेकिन सन्तों के अंदर जो प्यार काम करता है उसे किसी भी साधन की जरूरत नहीं होती।

गुरु बसे बनारसी सिख समुंद्र तीर, इक पल बिछड़े नाहीं यह गुण होय शरीर

कबीर साहब कहते हैं कि किसी सन्त के लिए दूर या नज़दीक का कोई फर्क नहीं पड़ता अगर हमने सिमरन करके अपने अंदर उस स्वरूप को ठहरने की जगह दे दी है, वह स्वरूप सदा ही सेवक के साथ रहता है।

आप दूर–दूर से सफर करके जिस मकसद के लिए यहाँ आए हैं। मैं आशा करता हूँ कि आप अपना समय उसी में लगाएंगे। प्रेमी आपको सारा कार्यक्रम बता देंगे।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा भजन में बिठाने से पहले

भजन-अभ्यास

हम अपने गुरुदेव सावन–कृपाल के आगे नमस्कार करते हैं जिन्होंने हमें अपनी भक्ति का दान दिया, अपनी याद में बैठने का मौका दिया। यह उनकी ही दया है जो आज हम उनकी याद में बैठे हैं। जब बारिश नहीं होती तो हर जीव के तन में तपिश पैदा होती है, सबका ख्याल उस प्रभु–परमात्मा की तरफ होता है।

पपीहा ही एक ऐसा पक्षी है जो अमृतवेले पुकार करता है। पपीहे की पुकार सुनकर परमात्मा पानी के देवता को हुक्म देता है कि तू इसकी प्यास को बुझा, पानी का देवता जल–थल कर देता है। पानी के देवता को हिन्दु शास्त्रों में इन्द्र देवता लिखा गया है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

अमृतवेले बोलया पपीहा तां दर सुणी पुकार
मेघा नूं फरमान होया बरसो कृपा धार

जब हमारी आत्मा पुकार करती है तब परमात्मा से भी रहा नहीं जाता। वह आत्मा की पुकार सुनकर अपना देश सच्चखंड छोड़ता है और इंसान बनकर हमारी प्यास बुझाने के लिए आ जाता है। स्वामी जी महाराज ने कहा है, ''जिन्हें शब्द का भेद नहीं मिला वे अंधे हैं बहरे हैं, भ्रम में फिर रहे हैं, वे जग में क्या लेने के लिए आए हैं?''

गुरु रामदास जी महाराज कहते हैं, 'मनुष्य जन्म पाकर जिन्हें नाम नहीं मिला उनकी माता बाँझ ही क्यों न बैठी रही उसने ऐसे बच्चे को जन्म ही क्यों दिया?''

कबीर साहब कहते हैं, ''जिसके हृदय में नाम नहीं बसा, जिसकी नाम लेने की इच्छा नहीं हुई वह अपराधी जन्म लेते ही क्यों न मर गया?''

सन्तों ने बार–बार नाम की महिमा गाई है। जो महात्मा नामरूप हो जाता है उसे तिनके–तिनके में नाम ही नज़र आता है। हम काल के संगल को नाम की कमाई से ही काट सकते हैं। हम किसी पूर्ण महात्मा की शरण में जाकर ही नाम प्राप्त कर सकते हैं नाम के साथ जुड़ सकते हैं।

नाम कण–कण में व्यापक है, नाम सच्चखंड में है। महात्मा हमें उस नाम के साथ जोड़ देते हैं और अंदर जाने में हमारी मदद करते हैं। नाम हमारे शरीर में है, हम अंदर जाकर ही उसके साथ मिल सकते हैं।

आप बाहर से ख्याल हटाएं, इस एक घंटे के समय को पवित्र समझें। दुनिया के ख्याल दिमाग से निकालें और सिमरन करें।

***

नये शब्द

1. की कहाँ ते किस मुँह नाल आखां 34

2. मुद्दत होई यार विछुड़ेयां पा फेरां 35

3. ऐस दिल नूं मैं किंझ समझांवां जी 36

4. दुःख कीनूं दस्सां 37

5. दाता तेरियां रूहां तेरे दर आ गईयां 38

6. दर तेरे ते दस्तक दित्ती दरवाजा ते खोल 39

जिस भाव से भजन लिखे गए हैं हमें उसी भाव से भजन गानें चाहिए। भजन गाते हुए हमें अपनी तरफ से कोई अन्य शब्द या नाम इस्तेमाल नहीं करना चाहिए अगर हम ऐसा करते हैं तो हम बाणी का निरादर कर रहे होते हैं।

आप जब संगत में भजन गाएं तो सबसे पहले पेज नम्बर अवश्य बोलें ताकि संगत भी आपके साथ भजन गा सके।

की कहाँ ते किस मुँह नाल आखां

की कहाँ ते किस मुँह नाल आखां
बक्श दे सतगुरु अैब मेरे x 2
की कहाँ ते किस.....

1 किथों शुरू करां की आखां, समझ ना आवे मैनूं जी,
बेहिसाब ने अवगुण मेरे, किंझ सुणावां तैनूं जी x 2
कैंदया दाता लजया आवे x 2 किंझ आख सुणावां तैनूं जी,
की कहाँ ते किस.....

2 भुलया हां मैं जीव निमाणा, चढ़ गया मन दे हथां विच,
भुलया तेरा सिमरन दाता, पै गया मंदड़े कम्मां विच x 2
तकां हुण किस मुँह नाल दाता x 2 तेरियां सोहणियां अखां विच,
की कहाँ ते किस.....

3 हर इक अैब मेरे विच दाता, लम्बी लिस्ट गुनाहां दी,
फोलीं नां कोई वरका इस चों, हथ जोड़ कुरलावां जी x 2
कज्ज लवीं तू परदा दाता x 2 जिवें अज तक कज्जया जी,
की कहाँ ते किस.....

4 पाड़दे वरके दाता मेरे, कीते खोटेयां कर्मां दे,
दया बणी रहे बस दाता, मेरे जेहे बेशर्मां ते x 2
बक्श दे बक्शणहार कहावें x 2 कोई नमक ना छिड़के जख्मां ते,
की कहाँ ते किस.....

5 अजायब सतगुरु दाता तू हैं, तू ही लाज रखावेंगा,
अैबां भरे 'गुरमेल' पापी नू, तू ही चरणी लावेंगा x 2
चरणी डिगयां पापीयां नूं दाता x 2 तू ही पार लगावेंगा,
की कहाँ ते किस.....

मुद्दत होई यार विछुड़ेयां पा फेरा

मुद्दत होई यार विछुड़ेयां पा फेरा,
रूल गए विच संसार विछुड़ेयां पा फेरा,

1 होई कोंण खुनामी, जो तूं मुड़ेया इ ना x 2
तरले ओसियां पाए, तूं ते सुणेया इ ना,
आजा आजा आजा x 2 मुड़ेया पा फेरा,
मुद्दत होई यार .....

2 लंघदे ने दिन साडे, तरले पोंदेयां दे x 2
साह जे दाता चलदे, साडे जिओं देयां दे,
करे यतन बहुत मैं दाता x 2 बझदा ना ज़ेरा,
मुद्दत होई यार .....

3 मन वी दागी, तन वी दागी हो गया है x 2
समझ नी ओंदी दाता, की की हो गया है,
बणके आजा वैद्य x 2 जे धरजां मैं ज़ेरा,
मुद्दत होई यार .....

4 हिम्मता टुटियां हौंसले टुटे, तन वी मेरा थक गया x 2
सुण सुण गल्लां ताने फिकरे, मन वी मेरा अक्क गया,
दिसदा ना कोई चारे पासे x 2 पै गया जिवें है नेरा,
मुद्दत होई यार .....

5 रब सी मेरा रब है मेरा, सब कुछ तूं ही है मेरा x 2
देख ना अवगुण अजायब जी, मैं तेरा बस मैं तेरा,
'गुरमेल' दे कोले आके x 2, बैह जा इक वेरां
मुद्दत होई यार .....

ऐस दिल नूं मैं किंझ समझांवां जी

ऐस दिल नूं मैं किंझ समझांवां जी
उम्रां तां लंघ चलियां दाता जी उम्रां तां लंघ चलियां.....

1 दु:ख विछोड़े दा बहुत सतोंदा वे x 2
सोहणेया दर्श बिना चैन नहीं औंदा वे x 2
बह जा सामणें तूं इक वारी आके जी उम्रां तां लंघ चलियां.....

2 दर्द विछोड़ा अज किने साल होए वे x 2
जांणदा ऐं तेरे बाजों किना अस्सी रोए वे x 2
हुण हिम्मतां ने तेरे बाजों हारियां जी उम्रां तां लंघ चलियां.....

3 तेरे ही विछोड़े वाली अग्ग मैं तां सेकदी x 2
बैठ तेरे दर उत्ते तेरा ही राह देखदी x 2
कीते वादेयां नूं आप निभा जा जी उम्रां तां लंघ चलियां.....

4 मसां मसां जिंदड़ी तैं प्यार विच रंगी वे x 2
जापदा है जन्मा तों तेरे नाल मंगी वे x 2
बण सजण तू डोली मेरी चा जी उम्रां तां लंघ चलियां.....

5 समझ यतीम दाता तूं ही गल लाया सी x 2
प्यार वाला बीज दाता आप तूं लगाया सी x 2
दर्श तेरे बिना रूह मुरझावे जी उम्रां तां लंघ चलियां.....

6 प्यार दा पुजारी दाता अजायब जी सदावें तूं x 2
सागर प्यार दा कृपाल जिनूं गावें तूं x 2
ओसे प्यार नूं 'गुरमेल' कुरलावे जी उम्रां तां लंघ चलियां.....

दु:ख कीनूं दस्सां

दु:ख कीनूं दस्सां, वे मैं दु:ख कीनूं दस्सां
दु:ख कीनूं दस्सां, दिल वाले दाता मेरेया
दु:ख कीनूं दस्सां, वे मैं दु:ख कीनूं दस्सां

1 भरया प्याला पापां गमां नाल दातेया
सुणदा नी कोई तेरे बाजों दु:ख दातेया x 2
करां अरजोई x 2 तेरे तांई मेरे दातेया
दु:ख कीनूं दस्सां, दिल वाले दाता.....

2 जीव हां निमाणा, कोई शहंशाह तां हां नहीं
छोटी जेही औकात मेरी, समझदा वी हां नहीं x 2
छड दित्ता जित्थे x 2 ऐहे फानी संसार आ
दु:ख कीनूं दस्सां, दिल वाले दाता.....

3 संसार विच दाता, जदों तूं विसारेया
दु:खां दे खजाने भरे, मेरे कोल दातेया x 2
झाक इक वारी x 2 मेरे वल मेरे दातेया
दु:ख कीनूं दस्सां, दिल वाले दाता.....

4 खुशी सुख हासा, मौज मस्ती की हुंदे ने,
मंदभागे जीव, काल नगरी च रोंदे ने x 2
जख्मी है दिल x 2 तन रोगां ने है खा लया
दु:ख कीनूं दस्सां, दिल वाले दाता.....

5 सुण लै पुकार, अजायब कृपाल दे दुलारेया,
ओही हां मैं जीव, जिनूं 'गुरमेल' सी पुकारेया x 2
रख लै तूं रख x 2 पत्त मेरी ओ दातारेया
दु:ख कीनूं दस्सां, दिल वाले दाता.....

दाता तेरियां रूहां तेरे दर आ गईयां

दाता तेरियां रूहा, तेरे दर आ गईयां x 2
बख्श देयो मेहर करके, दु:खड़े असीं सह रहियां
दाता तेरियां रूहां, तेरे दर आ गईयां x 2

1 आजा कोले बैठ असाडे, दिल दियां गल्लां करिए
दु:ख–सुख दर्द सुनेहे सजणा, तेरे कोले कहिऐ x 2
बात नी साडी पुछदा कोई, तेरे दर हुण आ गईया
दाता तेरियां रूहां, तेरे दर आ गईयां x 2

2 वक्त गवाया गल्ली बाती, गफलत दे विच आके
पाप कमाए बहुते सारे, मन दे कहणे आके x 2
बहुत हो गया काल पसारा, तेरे चरणी पै गईयां
दाता तेरियां रूहां, तेरे दर आ गईयां x 2

3 दु:ख वी है ते गिला वी दाता, तेरे विछोड़े ताईं
आ ईक वारी गल नाल ला लै, छड्ड न मुड़ तू जाईं x 2
रो लए सारी उम्र बथेरा, वापस घर नूं आ गईयां
दाता तेरियां रूहां, तेरे दर आ गईयां x 2

4 कहे अजायब सुण कृपाल प्यारे, तेरे वारे जाईऐ
तक्क लै साडे वल्ल प्यारे, पार उतारे पाईऐ x 2
बख्श दे दाता अवगुण साडे, सी माड़े कर्मीं पै गईयां
दाता तेरियां रूहां, तेरे दर आ गईयां x 2

दर तेरे ते दस्तक दित्ती दरवाजा ते खोल

दर तेरे ते दस्तक दित्ती, दरवाजा ते खोल
जी आयां जे आख नी सकदा, अलविदा ही बोल x 2

1 तू ही मेरी झोली दे विच, खैर प्यार दी पाई
प्यार दी तेरी ईक बूँद, मेरी सगली होंद रोशनाई, x 2
आप ही हुण इस रोशन रूह नूं x 2 पैरां हेठ न रोल
जी आयां जे आख नी सकदा, अलविदा ही बोल x 2

2 तन वी तेरा देणदार है, रूह वी है करजाई,
तन हुण मेरा रोगां खादा, रूह वी फिरे घबराई x 2
हुण इस मन दे झखड़ा अग्गे x 2 रह न सकां अडोल
जी आयां जे आख नी सकदा, अलविदा ही बोल x 2

3 अजे वी चेते दे तल उत्ते, तेरा ही परछावां
की होया जे बदल गया है, तेरा वे सिरनावां x 2
किद्दर जावां किद्दर लब्बां x 2 फिरदी हां अनभोल
जी आयां जे आख नी सकदा, अलविदा ही बोल x 2

4 अजे वी ख्वाबां दे विच जगदे, याद तेरी दे दीवे,
साह तेरे दी धड़कन अजे वी, हिक मेरी विच जीवे x 2
राह तक तक मैं ओसियां पावां x 2 काग बुलावा कोल,
जी आयां जे आख नी सकदा, अलविदा ही बोल x 2

5 'अजायब' मन दी मिट्टी उत्ते, उकरे रोसे हासे
कन्ना दे विच अजे वी गूंजण, कृपाल दे बोल पतासे x 2
मैं सुहागण तेरा राह वे तकदी x 2 हुण आ दरवाजा खोल
जी आयां जे आख नी सकदा, अलविदा ही बोल
दर तेरे ते दस्तक दित्ती, दरवाजा ते खोल
जी आयां जे आख नी सकदा, अलविदा ही बोल

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज व परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज

RNI No - RAJHIN/2003/9899

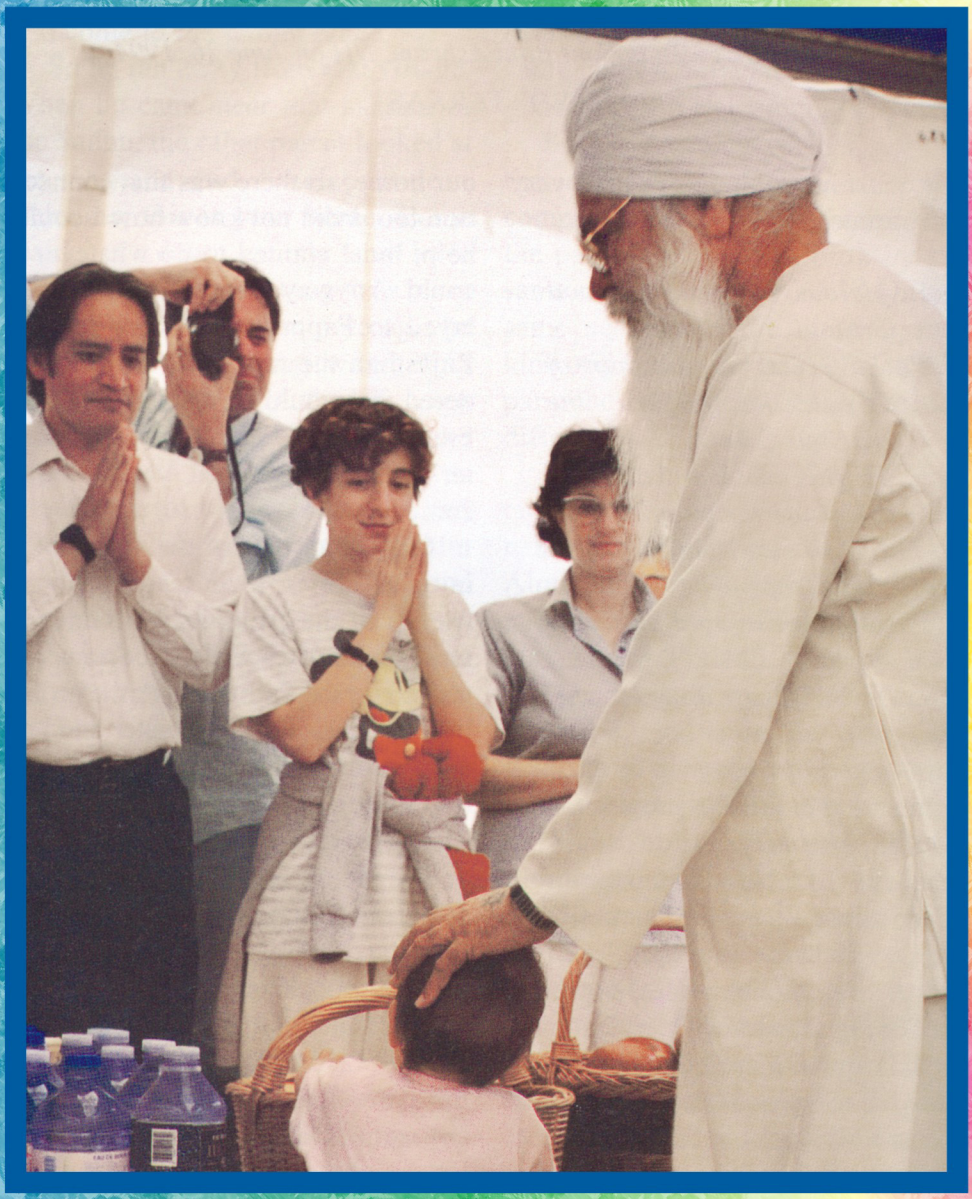

HAPPY BIRTHDAY BABAJI